**आरती कुंजबिहारी की | Aarti Kunj Bihari Ki Lyrics**

**आरती कुंजबिहारी की,**  
**श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥**  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥गले में बैजंती माला,  
बजावै मुरली मधुर बाला ।  
श्रवण में कुण्डल झलकाला,  
नंद के आनंद नंदलाला ।  
गगन सम अंग कांति काली,  
राधिका चमक रही आली ।  
लतन में ठाढ़े बनमाली  
**भ्रमर सी अलक,**  
**कस्तूरी तिलक,**  
**चंद्र सी झलक,**  
**ललित छवि श्यामा प्यारी की,**  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*  
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,  
देवता दरसन को तरसैं ।  
गगन सों सुमन रासि बरसै ।  
**बजे मुरचंग,**  
**मधुर मिरदंग,**  
**ग्वालिन संग,**  
**अतुल रति गोप कुमारी की,**  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*  
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

जहां ते प्रकट भई गंगा,  
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।  
स्मरन ते होत मोह भंगा  
**बसी शिव सीस,**  
**जटा के बीच,**  
**हरै अघ कीच,**  
**चरन छवि श्रीबनवारी की,**  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*  
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,  
बज रही वृंदावन बेनू ।  
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू  
**हंसत मृदु मंद,**  
**चांदनी चंद,**  
**कटत भव फंद,**  
**टेर सुन दीन दुखारी की,**  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*  
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

**allbhajan.com**